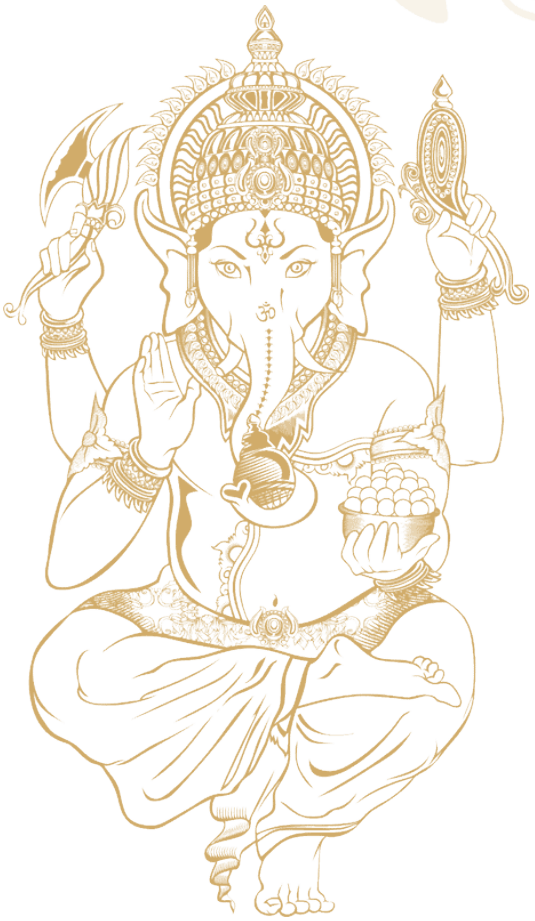

Sanjit Kumar

17 Nov 1996

07:00 AM

Jamalpur

Model: Baby-Horoscope **Order No: 119946601**

तिथि 17/11/1996 **समय** 07:00:00 **वार** रविवार **स्थान** Jamalpur **चित्रपक्षीय अयनांश** : 23:48:49
अक्षांश 25:19:00 उत्तर **रेखांश** 86:30:00 पूर्व **मध्य रेखांश** 82:30:00 पूर्व **स्थानिक संस्कार** 00:16:00 घंटे

पंचांग

साम्पातिक काल	11:01:34 घं
वेलान्तर	00:15:01 घं
सूर्योदय	06:02:49 घं
सूर्यास्त	16:55:10 घं
चैत्रादि संवत	2053
शक संवत	1918
मास	कार्तिक
पक्ष	शुक्ल
तिथि	7
नक्षत्र	श्रवण
योग	वृद्धि
करण	गर

अवकहड़ा चक्र

गण	देव
योनि	वानर
नाड़ी	अन्त्य
वर्ण	वैश्य
वश्य	जलचर
वर्ग	मार्जार
युँजा	अन्त्य
हंसक	भूमि
जन्म नामाक्षर	खे-खेमचन्द
पाया(रा.-न.)	ताम्र-ताम्र
होरा	सूर्य
चौघड़िया	उद्वेग

विंशोत्तरी

चन्द्र 3वर्ष 10मा 4दि
गुरु
21/09/2025
21/09/2041

गुरु	10/11/2027
शनि	23/05/2030
बुध	28/08/2032
केतु	04/08/2033
शुक्र	04/04/2036
सूर्य	21/01/2037
चन्द्र	23/05/2038
मंगल	29/04/2039
राहु	21/09/2041

योगिनी

मंगला 0वर्ष 4मा 18दि
संकटा
06/04/2024
06/04/2032

संकटा	15/01/2026
मंगला	06/04/2026
पिंगला	16/09/2026
धान्या	17/05/2027
भ्रामरी	06/04/2028
भद्रिका	17/05/2029
उल्का	16/09/2030
सिद्धा	06/04/2032

ग्रह	व	अ	अंश	राशि	नक्षत्र	पद	स्वामी	अं.	स्थिति	षट्बल	चर	स्थिर	ग्रह तारा
लग्न			12:44:46	वृश्चि	अनुराधा	3	शनि	मंगल	---	0:00			
सूर्य			01:10:07	वृश्चि	विशाखा	4	गुरु	मंगल	मित्र राशि	1.59	कलत्र	पितृ	क्षेम
चंद्र			18:12:24	मक	श्रवण	3	चंद्र	बुध	सम राशि	1.23	भ्रातृ	मातृ	जन्म
मंगल			15:43:18	सिंह	पू०फाल्गुनी	1	शुक्र	सूर्य	मित्र राशि	1.30	मातृ	भ्रातृ	मित्र
बुध		अ	09:51:25	वृश्चि	अनुराधा	2	शनि	शुक्र	सम राशि	1.20	पुत्र	ज्ञाति	प्रत्यारि
गुरु			21:46:36	धनु	पूर्वाषाढ़ा	3	शुक्र	गुरु	स्वराशि	1.05	अमात्य	धन	मित्र
शुक्र			28:47:50	कन्या	चित्रा	2	मंगल	शनि	नीच राशि	1.04	आत्मा	कलत्र	सम्पत
शनि	व		07:02:09	मीन	उ०भाद्रपद	2	शनि	बुध	सम राशि	0.90	ज्ञाति	आयु	प्रत्यारि
राहु	व		13:01:54	कन्या	हस्त	1	चंद्र	राहु	मूलत्रिकोण		---	ज्ञान	जन्म
केतु	व		13:01:54	मीन	उ०भाद्रपद	3	शनि	राहु	मूलत्रिकोण		---	मोक्ष	प्रत्यारि

लग्न-चलित

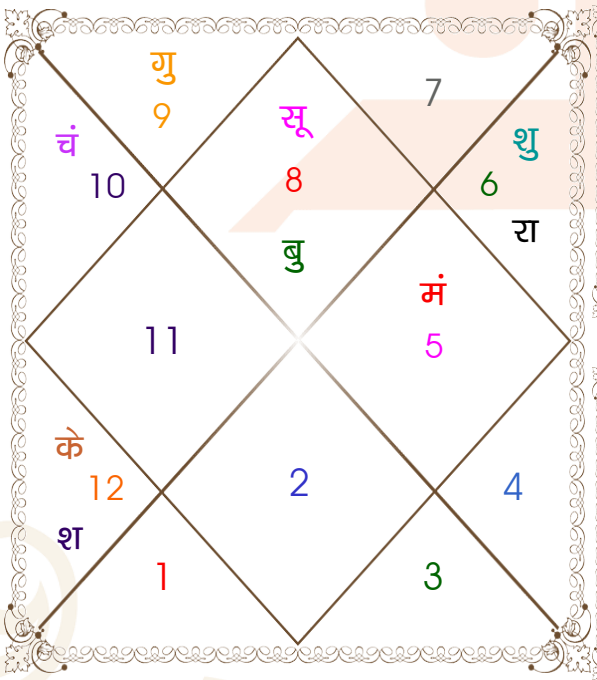

चन्द्र कुंडली

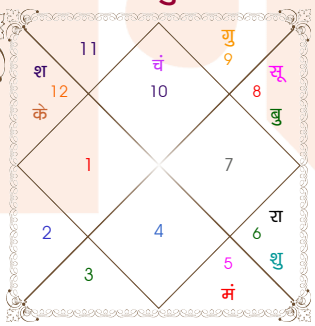

नवमांश कुंडली

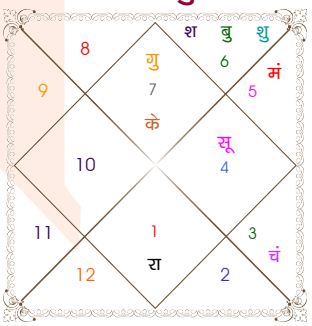

सर्वाष्टकवर्ग

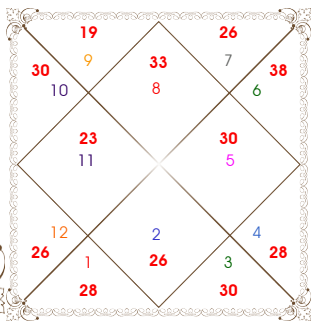

दशमांश कुंडली

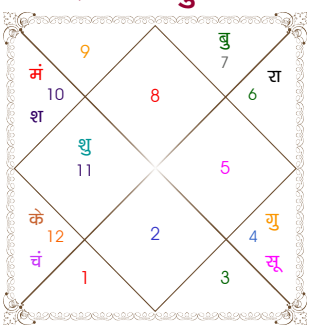

Rainstar Jyotish Kendra
Nanak Dairy Road near Ashoka Garden Hodal, Palwal, Haryana
+919050633029
pankajkumar.dadieya@gmail.com

नक्षत्रफल

आपका जन्म श्रवण नक्षत्र के तृतीय चरण में हुआ हैं। अतः आपकी जन्मराशि मकर तथा राशिस्वामी शनि होगा। नक्षत्र के अनुसार आपका वर्ण वैश्य, गण देव, नाड़ी अन्त्य, योनि वानर तथा वर्ग मार्जार होगा। नक्षत्र के तृतीय चरणानुसार आप के जन्म नाम का प्रारम्भ "खे" या "खै" अक्षर से होगा।

आपकी रूचि विभिन्न प्रकार के शास्त्रों के अध्ययन तथा ज्ञानार्जन प्राप्त करने में अधिक रहेगी। अतः आप परिश्रम पूर्वक इनका विस्तृत ज्ञान प्राप्त करेंगे। आपकी पुत्रों की सख्यां अधिक रहेगी एवं जीवन में इनसे पूर्ण सुख को प्राप्त करेंगे। साथ ही आपकी मित्रता का क्षेत्र भी विस्तृत रहेगा। अतः मित्रों की बहुलता रहेगी एवं उनसे आपको यथोचित सहयोग एवं सम्मान प्राप्त होता रहेगा। सज्जनों के प्रति आपके मन में सेवा एवं श्रद्धा की भावना रहेगी फलतः आप इनको हार्दिक मान सम्मान प्रदान करेंगे। आप शत्रु पक्ष पर विजय प्राप्त करने में अधिकांशतः सफल रहेंगे तथा वे भी आपसे पूर्ण रूप से भयभीत तथा प्रभावित होंगे इसके अतिरिक्त पुराणों तथा शास्त्रों को श्रवण करने की भी आपकी रूचि रहेगी एवं यत्नपूर्वक आप इनका श्रवण या अध्ययन करते रहेंगे।

शास्त्रानुरक्तो बहुपुत्रमित्रः सत्पात्रभक्ति विजितारिपक्षः।
प्राणी पुराणश्रवण प्रवीणश्चेज्जन्मकाले श्रवणं हि यस्य।।
जातकाभरणम्

अर्थात् श्रवण नक्षत्र में उत्पन्न जातक शास्त्रों में सलंग्न, अधिक पुत्र और मित्रों वाला, सत्पात्रों का भक्त, शत्रुनाश करने वाला एवं पुराण श्रवण करने में तेज होता है।

देवता तथा ब्राहमणों के प्रति आपके मन में विशेष श्रद्धा एवं सम्मान का भाव रहेगा। अतः इनकी सेवा तथा पूजा कार्य में आप प्रायः तत्पर रहेंगे। आप एक धनवान पुरूष होंगे तथा सुख पूर्वक जीवन में धनार्जन करके उसका उपभोग भी करेंगे। आप एक बुद्धिमान पुरूष होंगे तथा स्वबुद्धि एवं योग्यता के बल पर किसी उच्चाधिकार प्राप्त प्रतिष्ठित पद प्राप्त करने में भी सफल हो सकेंगे। साथ ही आप की प्रवृति धार्मिक कृत्यों का पालन करने की भी रहेगी।

श्रावणायां द्विजदेवभक्तिनिरतो राजा धनी धर्मवान।
जातक परिजातः

अर्थात् श्रवण नक्षत्र में उत्पन्न जातक देवता तथा ब्राह्मणों की भक्ति में तत्पर रहने वाला, राजा, धनी तथा धर्मनिष्ठ होता है।

समाज के सभी वर्गो में आप प्रिय होंगे तथा वे आपको पूर्ण मान सम्मान प्रदान करेंगे। विभिन्न शास्त्रों में पारंगत होने के कारण एवं श्रेष्ठ विद्वान के रूप में आप चारों तरफ ख्याति अर्जित करने में सफल रहेंगे। आप के मन में दया एवं करूणा की भावना विद्यमान

रहेगी तथा समयानुसार आप यथा शक्ति इस प्रवृति का अनुपालन करते रहेंगे। आप एक सौभाग्य शाली व्यक्ति होंगे तथा पत्नी के रूप में एक गुणवान तथा बुद्धिमान स्त्री को प्राप्त करेंगे। आप धनाढ्य पुरूष भी होंगे। अतः सांसारिक सुखों का आप आनन्द पूर्वक जीवन में परिवार सहित उपभोग करेंगे।

श्रीमाञ्छ्रवणे श्रुतवानुदारदारो धनान्वितः ख्यातः।
बृहज्जातकम्

अर्थात् श्रवण नक्षत्र में उत्पन्न जातक लक्ष्मीवान, पंडित, सौन्दर्ययुक्त, गुणीभार्या का पति, धनी तथा विख्यात होता है।

आप कृतज्ञता के गुण से सुसम्पन्न रहेंगे तथा समाज में किसी अन्य व्यक्ति के द्वारा उपकृत होने पर उसके उपकार को हादिक रूप से स्वीकार करेंगे एवं विनम्रतापूर्वक उनका आभार भी प्रकट करेंगे। अतः आपकी इस प्रवृति से लोग आपसे प्रसन्न एवं सन्तुष्ट रहेंगे। आपका शारीरिक सौन्दर्य भी दर्शनीय होगा तथा अन्य लोग आपसे प्रभावित भी रहेंगे एवं संतति संख्या भी आपकी अधिक ही रहेगी। इसके साथ ही सर्वप्रकार के सद्गुणों से युक्त होकर आप आनन्दपूर्वक अपना जीवन व्यतीत करेंगे।

कृतज्ञः सुभगोदाता गुणैः सर्वैश्च संयुक्तः।
श्रीमान सन्तानबहुलः श्रवणे जायते नरः।।
मानसागरी

अर्थात् श्रवण नक्षत्र में जातक कृतज्ञ, सुन्दर, दानी, सर्वगुणसम्पन्न एवं अधिक सम्पत्ति वाला होता है।

आपका जन्म ताम्रपाद में हुआ है। अतः जीवन में आप धन वैभव से प्रायः सुसम्पन्न ही रहेंगे तथा सुखपूर्वक जीवन में इसका उपभोग करेंगे। काव्यशास्त्र के प्रति भी आपकी रूचि रहेगी तथा इसमें आप परिश्रमपूर्वक ख्याति भी अर्जित करेंगे। भाइयों के प्रति आपके मन में पूर्ण स्नेह रहेगा तथा उनको आप हमेशा अपने ओर से प्रत्येक क्षेत्र में पूर्ण सहयोग प्रदान करते रहेंगे। सुन्दर वस्त्रों के प्रति आपके मन में आकर्षण रहेगा तथा इनको पहनने एवं संग्रह करने में आपकी पूर्ण रूचि रहेगी। आपका शारीरिक स्वास्थ्य उत्तम रहेगा तथा आप एक बलशाली पुरूष होंगे। साथ ही आप पराक्रम से भी युक्त रहेंगे एवं शौर्योचित कार्यों को करने के लिए सर्वदा उद्यत तथा तत्पर रहेंगे। आप सामान्यतया प्रसन्नचित रहेंगे। परन्तु आपका स्वभाव कृपण होगा। इसके अतिरिक्त आप एक विद्वान एवं सौभाग्यशाली पुरूष भी रहेंगे तथा सुख एवं प्रसन्नतापूर्वक जीवन व्यतीत करेंगे।

मकर राशि में उत्पन्न होने के कारण आपका कद ऊंचा तथा मस्तक विशालाकृति का होगा। आपके नेत्र सुन्दर होंगे तथा शारीरिक सौन्दर्य भी आकर्षक रहेगा। संगीत के प्रति आपके मन में विशेष आकर्षण रहेगा एवं इसका विशेष ज्ञान अर्जित करने के लिए आप नित्य प्रयत्नशील रहेंगे तथा इसमें सफलता भी प्राप्त करेंगे। शीत से आप व्याकुलता की अनुभूति

करेंगे एवं इसको सहन करने में असमर्थ रहेंगे। सत्य के प्रति आपके मन में पूर्ण निष्ठा होगी तथा आजीवन इसका आप यत्नपूर्वक अनुपालन करने के लिए तत्पर रहेंगे। समाज में आप एक माननीय व्यक्ति होंगे एवं सभी लोग आपको हार्दिक मान सम्मान प्रदान करेंगे। साथ ही दूर दूर तक आपकी प्रसिद्धि भी व्याप्त रहेगी। आप कभी कभी अल्प मात्रा में क्रोध का भी प्रदर्शन करेंगे। समाज के सभी वर्गों के लिए आपके मन में प्रायः प्रेम एवं स्नेह का भाव विद्यमान रहेगा तथा घृणा एवं द्वेष की भावना किसी के भी प्रति नहीं रहेगी। आप अपनी आयु से अधिक आयु वाले मनुष्यों से प्रेम तथा मित्रता के संबंध स्थापित करने के इच्छुक रहेंगे। लेखन कार्य के प्रति भी आपकी रूचि रहेगी। अतः कविता सृजन में आपको सफलता प्राप्त हो सकती हैं। आप में उत्साह की भावना विद्यमान रहेगी परन्तु भाग्य आपका प्रबल होगा अतः कई शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्य स्वतः ही अल्प परिश्रम से सिद्ध हो जाएंगे। कभी कभी आप लालची भाव का भी प्रदर्शन करेंगे तथा अपने लिए अनावश्यक समस्याएं उत्पन्न करेंगे।

गीतज्ञः शीतभीरुः पृथुलतरशिराः सत्यधर्मोपसेवी
प्रांशुः ख्यातोळल्परोषो मनसिभवयुतो निर्धृणस्त्यक्तलज्जः।।
चार्वक्षः क्षामदेहो गुरूयुवतिरतः सत्कविवृतजङ्घो
मन्दोत्साहोळतिलुब्धः शाशिनि मकरगे दीर्घकण्ठोळतिकर्णः।।
सारावली

आप पत्नी तथा पुत्र सहित अपने परिवार के पालन में अधिकांशतया व्यस्त रहेंगे। आप केवल दिखावे के लिए धर्म के प्रति अपनी श्रद्धा प्रदर्शित करेंगे एवं धार्मिक क्रियाओं का भी अनुपालन करेंगे। आप दूसरे लोगों की बातों से शीघ्र ही सन्तुष्ट तथा सहमत हो जाएंगे एवं उन्हीं के कहे अनुसार ही आचरण भी करेंगे। आप में आलस्य भी विद्यमान रहेगा। अतः आपके कार्य शनैः शनैः ही सम्पन्न होंगे। आपको भ्रमण तथा यात्रा करने का अत्याधिक शौक रहेगा एवं आपका अधिकांश समय भी इसी पर व्यतीत होगा। आप कठिन कार्यों को करने तथा अगम्य स्थानों पर जाने के लिए भी उत्सुक रहेंगे। साथ ही कभी कभी आप स्वभाव से कठोरता का प्रदर्शन भी अन्य जनों के समक्ष करेंगे। आप अपने जीवन काल में वात जनित रोगों से प्रायः व्याकुल रहेंगे एवं समय समय पर इनसे कष्टानुभूति भी प्राप्त करेंगे। इसके अतिरिक्त आप सर्वप्रकार से सत्वगुणों से सुशोभित रहेंगे तथा जीवन में यत्नपूर्वक उनका पालन करते रहेंगे।

नित्यं लालयति स्वदारतनयान्धर्मध्वजोळधः कृशः।
स्वक्षः क्षामकटिर्गृहीतवचनः सौभाग्ययुक्तोळलसः।।
शीतालुर्मनुजोळटनश्च मकरे सत्वधिकः काव्यकृत्।।
लुब्धोडगम्यजराङ्गनासु निरतः सन्त्यक्तलज्जोळघृणः।।
बृहज्जातकम्

आप अपने परिवारिक जनों के मध्य विशेष सम्मान अर्जित करने में अल्प मात्रा में ही सफल रहेंगे परन्तु कुल या परिवार की रीति का आप दृढता पूर्वक अनुपालन करेंगे एवं उसकी वृद्धि के लिए सर्वथा तत्पर रहेंगे। आप हमेशा स्त्री से पराजित रहेंगे तथा समस्त सांसारिक कार्यों को उसी के कथनानुसार ही सम्पन्न करेंगे। किसी भी समस्या के समाधान के

लिए स्वतंत्र निर्णय लेने में आप अपने आपको असमर्थ सा महसूस करेंगे। आपको विभिन्न प्रकार के शास्त्रों का विस्तृत ज्ञान रहेगा। अतः समाज में दूर दूर तक एक श्रेष्ठ विद्वान के रूप में भी आप की प्रसिद्धि व्याप्त रहेगी। कभी कभी आप असत्य भाषण या अफवाह आदि फैलाने में भी अपना सक्रिय योगदान प्रदान करेंगे। महिला वर्ग में आप प्रिय एवं आदरणीय रहेंगे तथा उनसे आप को पूर्ण रूपेण प्रशंसा की प्राप्ति होगी। भाइयों के प्रति आपका विशेष ध्यान रहेगा एवं यत्न पूर्वक उनकी सहायता करते रहेंगे एवं वे भी आपका हार्दिक सम्मान करेंगे। धनैश्वर्य से आप सम्पन्न रहेंगे एवं इसके अभाव का आपको आभास नहीं होगा। आपके सेवक गण भी सुन्दर तथा गुणवान होंगे एवं आदर पूर्वक आपकी सेवा में सर्वथा तत्पर रहेंगे। आप में त्याग की भावना भी विद्यमान रहेगी एवं समयानुसार इस प्रवृति का आप समाज या परिवार के मध्य प्रदर्शन करते रहेंगे। आप का परिवार भी बड़ा होगा एवं सुख संसाधनों की प्राप्ति के लिए आप नित्य चिन्तित रहेंगे तथा उसे प्राप्त करने के लिए प्रयत्नशील भी रहेंगे।

कुले नष्टो वशः स्त्रीणां पंडितः परिवादकः।
गीतज्ञो ललिताग्राहयो पुत्राढ्यो भातृवत्सलः।।
धनी त्यागी सुभृत्यश्च दयालुर्बहुबान्धवः।
परचिन्तितसौख्यश्च मकरे जायते नरः।।
मानसागरी

जीवन में आप किसी अन्य व्यक्ति, मित्र या सम्बन्धी की धन सम्पति को प्राप्त कर सकेंगे तथा सुख पूर्वक उसका उपभोग भी करेंगे। आप केवल अपनी ही नहीं अपितु अन्य जनों के विषय में भी सोचेंगे एवं प्रयत्न पूर्वक दूसरों की सहायता भी करते रहेंगे। आप सलाह देने या मंत्रणा आदि कार्य करने में अत्यन्त ही निपुण होंगे एवं सभी लोग आपकी इस दक्षता से लाभ उठायेंगे। भाई बन्धुओं का आप पूर्ण रूप से पालन तथा सहयोग करेंगे। आप एक बहादुरी तथा वीरता के गुणों से भी सुसम्पन्न रहेंगे। एवं साहस पूर्वक जीवन व्यतीत करेंगे।

विलसति परनारीं लुब्धसम्पत्ति भोगी।
नरपतिरिव चिन्तो मंत्रवाद प्रशस्तः।।
कृशतनुरतियुक्तो बन्धुवर्गस्य भर्ता।
भवति मकरराशिर्दानवो वीरभावः।।
जातक दीपिका

गीतशास्त्र के आप एक श्रेष्ठ विद्वान हो सकेंगे तथा समाज में दूर दूर तक इस क्षेत्र में आपकी ख्याति रहेगी। आपका शरीर भी कान्ति तथा लावण्यता से युक्त रहेगा। काम भावना की आप में प्रबलता रहेगी तथा यदा कदा इससे आप व्याकुलता की भी अनुभूति करेंगे।

कलितशीतभयः किल गीतवित्तनुरूषासहितो मदनातुरः।
निजकुलोत्तमवृतिकरः परं हिमकरे मकरे पुरूषो भवेत्।।
जातका भरणम्

देव गण में पैदा होने के कारण आपकी वाणी मधुर तथा श्रेष्ठ होगी। आपकी बुद्धि

भी सरल रहेगी तथा आप अपने विचारों का आदान प्रदान सुगमता से सम्पन्न करेंगे एवं अन्यों के विचारों को भी सरलता पूर्वक ग्रहण करेंगे। आप को थोड़ी मात्रा में सात्विक भोजन करना अत्यन्त ही रूचिकर लगेगा। अन्य जनों के गुणों के विषय में आपको पूर्ण ज्ञान रहेगा तथा सज्जन दुर्जन की पहचान करने में भी आप समर्थ रहेंगे। साथ ही स्वयं भी श्रेष्ठ विद्वानों द्वारा प्रतिपादित गुणों से युक्त रहेंगे। इसके अतिरिक्त विभिन्न प्रकार के धन वैभव से भी आप सम्पन्न रहेंगे तथा जीवन में सुखपूर्वक इसका उपभोग करेंगे।

आपका स्वरूप देखने में सुन्दर होगा तथा दानशीलता की प्रवृति से भी आप युक्त रहेंगे तथा जीवन में इस प्रवृति के अनुपालन के लिए भी नित्य प्रयत्नशील रहेंगे। आप एक बुद्धिमान पुरूष होंगे तथा सादगी पूर्ण जीवन व्यतीत करना पसन्द करेंगे एवं अनावश्यक भौतिकता तथा दिखावे से दूर ही रहने का यत्न करेंगे। इसके अतिरिक्त आप को शास्त्र ज्ञान भी विस्तृत रूप से रहेगा जिसमें आप एक विद्वान के रूप में समाज में सम्मान तथा ख्याति अर्जित कर सकेंगे।

सुस्वरः सरलोक्तमतिः स्यादल्पभोजन करो हि नरश्च।
जायते सुरगणे डणज्ञः सुज्ञवर्णितगुणो द्रविणाढ्यः।।
जातकाभरणम्

अर्थात देवगण का जातक अच्छी वाणी वाला, सरल बद्धि से युक्त, अल्प मात्रा में भोजन करने वाला, अन्य जनों के गुणों का ज्ञाता, महान विद्वानों द्वारा वर्णित गुणों से युक्त तथा वैभवशाली होता है।

वानर योनि में उत्पन्न होने के कारण आप में स्वाभाविक रूप से चंचलता का भाव विद्यमान रहेगा। मिष्ठान के आप अत्याधिक प्रेमी होंगे तथा इसे नित्य भक्षण करने के लिए लालयित रहेंगे। धन प्राप्त करने के लिए आप में व्याकुलता रहेगी तथा इसे प्राप्त करने में आप आतुरता का भी प्रदर्शन करेंगे। आपकी सभी संतति बुद्धिमान एवं गुणवान होंगी। विवाद आदि में भी आपकी रूचि रहेगी एवं अन्य जनों से आपका विवाद भी होता रहेगा। साथ ही वीरता के गुणों से भी आप युक्त रहेंगे तथा साहस पूर्वक अपना जीवन यापन करेंगे।

चपलो मिष्टभोगी चार्थलुब्धश्च कलिप्रियः।
सकामःसत्प्रजःशूरोनरो वानरयोनिजः।।
मानसागरी

अर्थात् वानर योनि में उत्पन्न पुरूष चंचल, मीठी चीजों का खाने वाला, धन का लोभी, झगड़ों का प्रेमी, काम चेष्टा वाला, अच्छी सन्तान से युक्त एवं शूरवीर होता है।

आपके जन्म समय में चन्द्रमा की स्थिति तृतीय भाव में है। अतः माता का स्वास्थ्य अच्छा रहेगा। आपके प्रति उनका पूर्ण अपनत्व तथा स्नेह का भाव रहेगा एवं जीवन में सर्वप्रकार से आपकी सहायता करने के लिए वे नित्य तत्पर रहेंगी। साथ ही शक्ति, साहस एवं पराक्रम में आपकी वृद्धि में वे सदैव सहायक रहेंगी। इसके अतिरिक्त वे आपको समय समय पर अच्छा

भोजन खिलाने के लिए भी तत्पर रहेंगी।

आपके मन में भी उनके प्रति पूर्ण सम्मान तथा श्रद्धा का भाव रहेगा एवं उनकी आज्ञा पालन के लिए प्रायः तत्पर रहेंगे। साथ ही यदा कदा सैद्धान्तिक मतभेद भी उत्पन्न होंगे परन्तु इससे आपके मधुर संबंधों में कोई विशेष प्रभाव नहीं पडेगा। इसके अतिरिक्त आप जीवन में उनकी पूर्ण सेवा तथा आर्थिक सहायता तथा अन्य प्रकार का सहयोग करने के लिए तत्पर रहेंगे एवं उन्हें किसी भी प्रकार असुविधा नहीं होने देंगे। इसके लिए आप सर्वदा प्रयत्नशील रहेंगे।

आपके जन्म समय में सूर्य लग्न में स्थित है। अतः पिता के आप प्रिय रहेंगे तथा उनका स्वास्थ्य भी अच्छा रहेगा एवं किसी भी प्रकार से शारीरिक रुग्नता का अभाव रहेगा। साथ ही उनकी आयु भी दीर्घ रहेगी। जीवन में वे आपको अपना आर्थिक तथा अन्य रूप से नित्य सहयोग प्रदान करते रहेंगे जिससे आपके सभी शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्य सम्पन्न होंगे। साथ ही पिता के द्वारा आपको ख्याति भी अर्जित होती रहेगी।

आपके मन में भी उनके प्रति हार्दिक श्रद्धा एवं सम्मान का भाव विद्यमान रहेगा। साथ ही उनकी आज्ञा का अनुपालन करने के लिए भी आप तत्पर रहेंगे। आपके आपसी संबंध मधुर रहेंगे परन्तु यदा कदा सैद्धान्तिक मतभेद भी उत्पन्न होंगे लेकिन इसका संबंधों पर विशेष प्रभाव नहीं पडेगा। साथ ही आप जीवन में उनको पूर्ण रूप से आर्थिक तथा अन्य प्रकार से सहयोग प्रदान करते रहेंगे एवं अपनी ओर से कोई कष्ट भी नहीं होने देंगे।

आपके जन्म समय में मंगल की स्थिति दशम भाव में है अतः भाई बहिनों का स्वास्थ्य अच्छा रहेगा परन्तु यदा कदा शारीरिक अस्वस्थता भी महसूस करेंगे। आपके प्रति उनके मन में पूर्ण स्नेह विद्यमान रहेगा। धन सम्पत्ति से वे युक्त रहेंगे एवं जीवन में समस्त शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में आपको अपना सहयोग प्रदान करते रहेंगे। इसके अतिरिक्त सुख दुःख में भी उनसे वांछित सहयोग आपको प्राप्त होता रहेगा। तथा नौकरी या यपार संबंध कार्यों में भी वे आपको सहपोग प्रदान करगै।

आपके हृदय में भी उनके प्रति पूर्ण स्नेह का भाव रहेगा तथा आपसी संबंधों में भी मधुरता रहेगी परन्तु कई बार मतभेदों के कारण संबंधों में तनाव भी उत्पन्न होगा परन्तु यह अल्प समय तक रहेगा। इसके साथ ही आप आजीविका संबंधी कार्यों में भी उन्हें सहयोग प्रदान करते रहेंगे एवं सुख दुःख में भी एक दूसरे का सहायता करते रहेंगे।

आपके लिए वैशाख मास, चतुर्थी, नवमी तथा चतुर्दशी तिथियां, रोहिणी नक्षत्र, वैधृतियोग, शकुनि करण, मंगलवार चतुर्थ प्रहर तथा सिंह राशि के चन्द्रमा हमेशा अशुभ फल दायक रहेंगे। अतः आप 15 अपैल से 14 मई के मध्य 4,9,14 तिथियों, रोहिणी नक्षत्र, व धृतियोग तथा शकुनिकरण में कोई भी शुभ कार्य व्यापार प्रारम्भ, नवगृहनिर्माण, क्रयविक्रयादि अन्य महत्वपूर्ण एवं शुभ कार्यों को सम्पन्न न करे अन्यथा लाभ की अपेक्षा हानि ही होगी। साथ ही मंगलवार, चतुर्थ प्रहर तथा सिंह राशि के चन्द्रमा को भी शुभ कार्यों में वर्जित रखें। इन दिनों तथा समय में शारीरिक सुरक्षा का भी पूर्ण ध्यान रखें।

यदि आपके लिए समय अशुभ चल रहा हो मानसिक तथा शारीरिक व्याकुलता, व्यापार में हानि, नौकरी या पदोन्नति में बाधा उत्पन्न हो रही हों तो ऐसे समय में आपको अपने इष्ट देव नृसिंह भगवान की उपासना करनी चाहिए तथा शनिवार के उपवास भी रखने चाहिए। इसके साथ ही सोना, नीलम, लोहा, कम्बल, तिल, तेल, चर्मपादुकाएं आदि पदार्थो का श्रद्धापूर्वक दान करना चाहिए। इससे आपको इससे आपको मानसिक शान्ति प्राप्त होगी तथा अशुभ फलों में न्यूनता आएगी। इसके अतिरिक्त शनि के तांत्रीय मंत्र के कम से कम 19000 जप किसी योग्य विद्वान के द्वारा सम्पन्न करवाने चाहिए इससे आपके लाभमार्ग प्रशस्त होंगे तथा शुभ फलों में वृद्धि होगी।

ऊँ प्रां प्रीं प्रौं सः शनैश्चराय नमः।
मंत्र- ऊँ ऐं ह्रीं श्रीं शनैश्चराय नमः।